शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 नवम्बर 2013

बिहार के कृषि आंदोलन में स्वामी सहजानंद का योगदान

संजय कुमार, शोधार्थी
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत

शोध संक्षेप

वस्तुतः बिहार में ही नहीं वरन् संपूर्ण भारत में कृषिजन्य असंतोष, आन्दोलन आर्थिक शोषण का प्रतिफल रही। बिहार में संगठित आंदोलन खड़ा करने का श्रेय स्वामी सहजानंद सरस्वती को जाता है। उन्होंने अंग्रेजी दासता के खिलाफ लड़ाई लड़ी और किसानों को जमींदारो के शोषण से मुक्त कराने के लिए निर्णायक संघर्ष किया। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके संघर्ष की पड़ताल की गयी है।

स्वामी सहजानंद और उनका संघर्ष

दण्डी सन्यासी होने के बावजूद सहजानंद ने रोटी को ही भगवान कहा और किसानों को भगवान से बढ़कर बताया। स्वामी जी ने नारा दिया था जो अन्न-वस्त्र उपजाएगा अब वही कानून बनाएगा। ये भारतवर्ष उसी का है। अब शासन वही चलायेगा। ऐसे महान नेता, युगद्रष्टा और किसानों के मसीहा का जन्म उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के देवा गाँव में सन् 1889 में महाशिवात्रि के दिन हुआ था। स्वामी जी के बचपन का नाम नौरंग राय था उनके पिता बेनी राय मामूली किसान थे सहजानंद सरस्वती मात्र छह साल के थे तभी उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। चाची ने उनका लालन-पालन किया। कहा जाता है कि होनहार पूत के पाँव पालने में ही दिखने लगते हैं। बालक सहजानंद सरस्वती को महानता के गुण उनके बचपन में ही दिखने लगे। उन्होंने अपने प्रतीभा का लोहा मनवाना शुरू कर दिया। पढ़ाई के दौरान ही उनका मन अध्यात्म में रमने लगा और वे देखने लगे कि कैसे भोले-भाले लोग नकली धर्माचार्य से गुरू मंत्र ले रहे है। उनके मन में ही पहली बार विद्रोह का भाव उठा। उन्होंने इस परंपरा के खिलाफ आवाज उठाया और संकल्प लिया धर्म के अंधानुकरण के खिलाफ उनके मन मे जो भावना पली और उन्होंने कच्ची उम्र में ही सन्यासी बन गए। उन्होंने संस्कृत भाषा और भारतीय वाम का गंभीर अध्ययन किया था।1 इसके बाद उन्होंने आत्मा-परमात्मा के मकड़ जाल से बाहर निकलकर समाज सुधर में किसान आंदोलन को जोड़ लिया था। स्वाधीनता संग्राम और किसान आन्दोलन का नेतृत्व करते हुए वे एक वामपंथी नेता के रूप में उभर पड़े। "खेत मजदूर और झारखण्ड" के किसान पुस्तक की रचना 1940-42 ई0 के दौरान की गई थी। इस पुस्तक में किसान समस्या के बारे में सहजानंद की सोंच में बहुत कुछ परिवर्तन नजर आता है। इस मंजिल तक पहुँचकर सहजानंद मध्यम कोटि के किसानों और सुखी संपन्न पट्टेदारों की अपेक्षा खेत मजदूरों और खेतिहरों पर भरोसा करने लगते है। यह बात उनके समझ में आने लगती

है कि किसान सभा और किसान आंदोलन का अगला चरण ग्रामीण सर्वहारा के जागरण पर निर्भर है। इसके पहले वाले चरण को मध्यम वर्गीय किसानों का आन्दोलन मानते है। वे इस बात से चिंतित थे कि किसान सभा का उपयोग बड़े किसान अपने हित में करते है। सहजानंद ने किसानो की समस्या पर विचार किया जिनकी तकलीफे जंगल और जमीन की थी। बंधुआ मजदूरी की थी और सूदखोरी की पीड़ा झेलनेवाली थी। उनके अनेक समस्याओं से किसान सभा बेखबर थी। सहजानंद से उनकी समस्याओं की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया और स्वामी सहजानंद सरस्वती ने बिहार में जब किसान आंदोलन शुरू किया तो उनके निशाने पर अधिकांश भूमिहार जमींदार ही थे, जो अपने इलाको में किसानों का शोषण किया करते थे। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में शुरू हुआ असहयोग आंदोलन बिहार में गति पकड़ा और स्वामी सहजानंद सरस्वती किसानों के अग्रणी नेता थें। बिहार में एक बड़ा हिस्सा बाभन (भूमिहार ब्राह्मण) जाति से आता था। टिकारी, हथुआ, बेतिया जैसी बड़ी-बड़ी रियासतों के मालिक इसी जाति से आते थे।2 पटना, मुंगेर, गया, चम्पारण आदि जिलों मायमी रैयतों का बड़ा भाग इसी जाति का था। डुमराँव राज द्वारा 'बेआयी' वसूली के खिलाफ स्थानीय लोगों का संघर्ष वर्षों से जारी था। बेआयी एक प्रकार का बिक्री कर था। सितम्बर 1970 ई में डुमराँव के व्यवसायियों ने महाराजा बहादुर से उपर्युक्त नारायण सिंह, जगतनारायण लाल और राजेन्द्र प्रसाद के समक्ष बातों को रखा 'एक प्रतिनिधि मंडल शाहबाद के जिलाधिकारी से मिला, लेकिन इसका कोई फल नहीं निकला। स्वामी जी ने देखा कि अंग्रेजी शासन की आड़ में जमीन्दार गरीब किसान पर जुल्म ढा रहे है। बिहार के गाँवों में गरीब लोग अंग्रेजो में नहीं बसते। गोरी सत्ता के इन भूरे दलालों से आतंकित है किसानों की हालत गुलामी से बदतर है। युवा सन्यासी का मन एक बार फिर नये संघर्ष की ओर विमुख होता है और उन्होंने किसानों को इस से मुक्त कराने का नींव रखा। सन् 1929 में उनहोंने बिहार प्रांतीय किसान सभा की नींव रखी। इस मंच से उन्होने किसानों की स्थिति को उठाया। जमींदारों से मुक्ति दिलाने और जमीन पर रैयतों का मलिकाना हक दिलाने की मुहिम शुरू की। इस रूप से देखे तो भारत के इतिहास में संगठित किसान आंदोलन खड़ा करने और उसका सफल नेतृत्व करने का एक मात्रा श्रेय स्वामी सहजानंद सरस्वती को जाता है। स्वामी जी ने किसानों को जमींदारो के शोषण और आतंक से मुक्त कराने का प्रयास किया और स्वामी जी का बढ़ता हुआ सर्किल देखकर अंग्रेजों ने उनको जेल में डाल दिया और स्वामी जी को कांग्रेस से मोहभंग होना शुरू हुआ।3

जब 1934 में बिहार प्रलयकारी भुकंप से तबाह हुआ तब स्वामीजी ने बढ़ चढ़कर राहत कोष में भाग लिया और देखा कि प्राकृतिक आपदा में अपना सबकुछ गंवा चूके किसानों को जमींदारो के लठैत टैक्स देने के लिए प्रताड़ित कर रहे थे। तब उन्होंने पटना में कैंप कर रहे महात्मा गाँधी से मिलकर किसानों का दशा बितायी और दोहरी मार से बचने के लिए प्रयास किया। गाँधी जी ने जबाब दिया कि जमींदारों का अधिकांश मैनेजर काँग्रेस के कार्यकत्र्ता है वे निश्चित तौर गरीबो का मदद करेगें। गांधीजी दरभंगा महाराज से मिलकर भी किसानो के लिए अन्न का बंदोबस्त

करने के लिए स्वामी जी से कहा कहते है कि गाँधी जी की ऐसी बात सुनकर स्वामी सहजानंद आगबबूला हो गये। तत्काल वहाँ से यह कहकर चल दिए कि किसानो का सबसे बड़ा शोषक तो दरभंगा राज ही है। मैं उससे भीख मांगने कभी नहीं जाऊँगा। इस घटना ने कांग्रेस नेताओं की कार्यशैली से नाराज चल रहे स्वामीजी का गाँधीजी से पूरी तरह मोहभंग कर दिया। विद्रोही सहजानंद ने एक झटके में ही चैदह साल पूरान संबंध तोड़ दिया और किसानों का हक दिलाने के लिए संघर्ष को ही जीवन लक्ष्य घोषित कर दिया। अप्रैल, 1936 में कांग्रेस के लखनऊ सम्मेलन में अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना हुई और स्वामी सहजानंद सरस्वती को उसका पहला अध्यक्ष चुना गया। एम.जी.रंगा, ई0 एम.एस., नंबूदरीपाढ, पड़ित कार्यानन्द शर्मा, पंडित यमुना कार्यजी आचार्य नरेन्द्रदेव, राहुल संकृत्यायन, राम मनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, पंडित यदुनन्दन शर्मा, पी. सुन्दरैया और बंकिम मुखर्जी जैसे कई नामी चेहरा किसान सभा से जुडे थे। इस संघर्ष के क्रम स्थानीय लोगों ने 'प्रजामंडल' नामक एक संगठन बनाया।4 इसी बीच यमुना कार्यो बिहार प्रांतीय किसान सभा के अध्यक्ष चुने गए और उन्होंने बेआयी कर के खिलाफ चलनेवाले संघर्ष का नेतृत्व थामा। किसानो की कुल 17 माँगें थी जिनमें बेआयी की वापसी, जंगल का रास्ता खोलना, गैर मजरूआ, कैसर-ए-हिन्द तथा मिलक लखीराज जमीनों की बंदोबस्ती लगान की बकाया रकम पर सुद लिए जाने का विरोध् आदि प्रमुख थे। कार्मी ने डुमराॅव का दौरा किया। बिहार प्रांतीय जमींदार सभा के महामंत्री राय बहादुर श्याम नंदन सहाय को पंच बनाया गया। मार्च 1942 ई. में पटना के आयुक्त एस.एल. मारवुड ने बेआयी कराके उन्मुलन का अपना फैसला सुना दिया था। डुमराव राज ने इस फैसले को तोड़-मरोड़ कर प्रकाशित कराया और आंदोलन में सक्रिय लोगों का सबक दिखाने की कारवाई भी शुरू कर दी। किसानो को शोषण मुक्त करने और जमींदारी प्रथा के खिलाफ लड़ाई लड़ते हुए स्वामी जी 26 जून 1950 को महाप्रयाण कर गये। उनके जीते-जी जमींदारी प्रथा का अंत नहीं हो सका।5

इस आंदोलन के दौर में किसान नेता स्वामी सहजानंद जेल में थे। रिहा किए जाने पर 23 मार्च 1942 ई0 को आयोजित सभा में उन्होंने बेआई कर के खिलाफ संघर्ष में 'जीत' हासिल करने पर डुमराव के किसानों को बधाई दी। इससे सिर्फ किसानों का बल्कि जन साधारण तथा डुमराव के बनियों का संकट हटा और सबने राहत की सांस ली। किसान सभा पर भुमिहार ब्राहमण जाति के सम्पन्न रैयतों का वर्चस्व था। ऊपर से नीचे तक लगभग सारे नेता भुमिहार थे। एकाध राजपूत, ब्राहमण और कायस्थ भी थे। लेकिन पिछड़ी जाति के नेताओं की संख्या नगण्य थी। स्वामी सहजानंद के अतिरिक्त यमुना कुर्मी, यदुनंद शर्मा, किशोरी प्रसन्न सिंह, इन्द्ररदीप सिन्हा, शीभद्र माणी, योगेन्द्रशर्मा, रामवृख बेनीपूरी, रामनंदन मिश्र, गंगा शरण सिंह, धनराज शर्मा आदि किसान सभा के बड़े नेता थे। 8 मई, 1947 से 17 मई 1947 ई. तक बिहट आश्रम में बिहार प्रांतीय किसान प्रशिक्षण शिविर का आंदोल किया गया था। इसमें 101 किसान कैडर शामिल हुए थे। इसमें पिछड़ी जाति के कैडरो की संख्या इससे अधिक नहीं थी। 1950 ई0 में शहाबाद यूनाइटेड किसान सभा की जिला कमेटी का भी यही हाल था।

प्रमुख राजनीतिक पार्टी कांग्रेस और किसान सभा की नेतृत्वकारी समितियों में पिछड़ी जातियों की उपस्थिति नगण्य थी। नगरपालिका, जिला बोर्ड और कौंसिल में इन जातियों के कम ही लोग थे। ऐसी स्थिति में यह एहसास बढ़ने लगा कि आपस में एक जुट हुए बिना तमाम पिछड़ी जाति दलित जातियों का कोई जमींदारो को संगठित ताकत से लोहा ले सकते है।6 इसी पृष्ठभूमि में 30 मई, 1933 ई. को शहाबाद जिले के करगहर में त्रिवेणी संघ का जन्म हुआ था। इसके जन्मदाताओं में यदुननदन प्रसाद मेहता, जगदेव सिंह यादव और शिवपुजन सिंह उल्लेखनीय है।

स्वामी सहजानंद जी कांग्रेसी नेताओ को त्रिवेणी संघ के गठन के लिए जिम्मेदार ठहरा रहे थे। दुसरी ओर राहुल सांकृत्यायन इसे जमींदारों को कारस्तानी मानते थे। जब से किसान आंदोलन में जोर पकड़ा तब से जमींदार श्रेणी किसानों की शक्ति कमजोर करने के लिए मजबुर हो गई। तब खुद किसान सभा का गठन किया जा रहा था। तब स्वयं राजेन्द्र प्रसाद ने इस सुझाव का विरोध करते हुए मद्रास में किसानों के एक शिष्टमंडल में कहा था। "कांग्रेस तो सभी वर्गो की सभा है।" अतः वह कोशिष करेगी कि वर्गो के स्वार्थी का वह समन्वय करती चले। यह सर्वविदित है कि किसान सभा के प्रारम्भिक वर्षों में स्वामी सहजानंद जी जमींदारी उन्मूलन के प्रस्ताव के खिलाफ थे। मुजफ्फरपुर जिला सम्मेलन में जब रामबृक्ष बेनीपुरी ने जमींदार उन्मूलन का प्रस्ताव रखा तो वे बेनीपुरी पर नाराज हुए। किन्तु यह प्रस्ताव विशाल बहुमत से पारित हो गया। इस प्रस्ताव के विरोध में स्वामी सहजानंद ने किसान सभा कार्यकारिणी से त्याग पत्र दे दिया था। 1946-47 ई0 में एक ओर जहाँ पुरे देश में आजादी की गहमागहमी थी, वहीं दुसरी ओर बिहारके देहाती इलाको में बकाश्त जमीन को लेकर जंग छिड़ी थी। पुरे प्रदेश में 20 लाख एकड़ बकाश्त जमीन थी। वर्षों से खेत जोत रहे गरीब कायमी और दर रैयती को अनेक बहाने बनाकर जमींदार उन्हें कायमी हक से बंचित कर बेदखल करने लगे। लेकिन पूरे प्रदेश में बकाश्त जमीन को केन्द्र कर किसानों का जुझारू आंदोलन भड़क उठा। शाहाबाद, पटना, गया, दरभंगा, पूर्णिया, मुजफ्फपफरपुर, लगभग हर जिले में किसानों का शैलाब उमड़ पड़ा। किसानों की मुख्य माँग थी जमींदारों की बकाश्त जमीन की उनके नाम से बंदोबस्ती और नजराना प्रथा की समाप्ति। शाहाबाद में मडुर से लेकर राजपुर, करगहर तक।7

दरभंगा और समस्तीपुर जिलों में सोशलिस्ट संघर्ष की बागडोर संभालते थे। अदमा, नेहरा, जगदीशपुर, अंधेरी आदि गाँवों में जबरदस्त संघर्ष फूट पड़ा। दरभंगा में योंगेन्द्र शुक्ल की अध्यक्षता में 8,000 लोगों की सभा हुई जिसमें करीब 3,000 महिलाये भी शामिल थी। खेत- मजदुर चेतना के व्यवहारिक प्रस्फूटन के दौरान ही समाज सुधारक स्वामी सहजानंद का स्वामी जी ने पहले किसानों की समस्या को देश की समस्या से ही नहीं बल्कि राहत की समस्या से जोड़ा और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ संघर्ष किया। खेत मजदूर वर्ग के बारे में उनका मानना था कि पहले वे किसान थे। जब उनकी जमीन हड़प ली गई तो वे खेत मजदुर बन गये। इसलिए स्वामी जी इस वर्ग के लिए खेत मजदूर शब्द का प्रयोग किया।8

खेत मजदूर एक ऐसे वर्ग का उत्तरी बिहार में प्रतिनिधित्व करते दिखाई देते है जो वहाँ की समाजिक आर्थिक ही नहीं वरन् राजनैतिक व्यवस्था को भी प्रभावित करते है। राष्ट्र की स्वतंत्रता के पश्चात् उनमें चेतना औपनिवेशिक शासन व उसके पश्चात् भारतीय भुमिहारों के खिलाफ भी जागृत हुई है। कालांतर में भूमि अधिग्रहण आन्दोलन के साथ-साथ प्रतिक्रियावादी रूप से या तो बाहर के क्षेत्रों में खेत मजदूर के रूप में कार्य हेतु इनका पलायन हुआ अथवा उन्होंने नक्सलवादी गतिविधियों में लिप्त होकर हथियार उठा लिए।

गया जिले में जबरन फसल काटने के 291 मामले दर्ज किए गए। नाम, इमादपुर, सरना, हबीबपूर, टालि आदि गाँवों में बकाश्त संघर्ष छिड़ा हुआ था। इसी बकाश्त संघर्ष के दौर में डाॅ0 राम मनोहर लोहिया ने जून 1947 ई. में चंपारण में निलहो द्वारा जमीन की लुट को जाँच की थी की जमीन से मत हटो, बकाश्त पर कब्जा करो' के नारे के साथ कम्यूनिस्ट पार्टी भी इस संघर्ष में सक्रिय थी। मुंगेर भागलपुर, पूर्णिया, मधुबनी, दरभंगा, सहरसा, चम्पारण और सीवान के ग्रामीण इलाके पार्टी गरीब कायमी रैयतो, बटइदारों और खेत मजदूरों के बीच अपना विकास कर रही थी।9

भागलपुर के गाँवों की सभाओं में लाल फौज जिंदाबाद' नेहरू सरकार मुर्दाबाद, जैसे नारे गूंजते! पूर्णिया, सहरसा और भागलपूर के सीमावर्ती ग्रामीण इलाको उन दिन क्रांतिकारियों की नक्षत्र की धूम मची थी। मालाकर प्रायः 50 से 1,000 के दल में जमींदारो की कचहरी पर धावा बोलते और उनकी संपति जब्त कर उसे गरीब रैयतों में बाट देते। बिहार में स्वामी सहजानंद और किसान सभा की लोकप्रियता में काफी वृद्धि हुई। 1936 में इसकी सदस्यता 2,50,000 तक पहुँच गई थी। इस प्रकार किसान सभा के संगठन को बिहार के गाँवों में फैलाने में स्वामी सहजानंद को कार्यानन्द शर्मा, राहुल सांस्कृत्यायन पंचानन शर्मा और यदुनंदन शर्मा जैसे बहुत से वामपंथी नेताओ का सहयोग मिला।10

इस तरह स्वामी सहजानन्द ने किसान आन्दोलन को एक नई दिशा दी तथा उसे संघर्षशील बनाने का भरपूर प्रयास किया उन्होंने ब्रिटिश सरकार के साथ-साथ जमींदारों और जमींदारी प्रथा दोनो का विरोध किया। उनके आंदोलन का मुख्य उद्देश्य था, शोषित और पीड़ित किसानों की मुक्ति। अतः किसान आंदोलन में स्वामी सहजानंद के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

सन्दर्भ

1. राय कौलेश्वर, बिहार का इतिहास'' किताब महल, इलाहाबाद, पृष्ठ सं0-259

2. राउत सुरेन्द्र, बिहार समग्र'' के0बी0सी0 प्रकाशन, दिल्ली, 2009. पृष्ठ सं0-74

3. दत्त के.के., बिहार में स्वतंत्राय आंदोलन का इतिहास भाग-3'', बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना 2000. पृष्ठ सं0- 285

4. शुक्ला पी.के., इंडिगो एण्ड द राजःपीजेन्टस प्रोटेस्ट इन बिहार', 1780-1917. दिल्ली, 1993

5. शर्मा के.के., एग्रेरियन मूवमेंट एण्ड कांग्रेस पोलिटिकस इन बिहार', 1927-47. दिल्ली, 1989

6. दास अरविन्द एन., एग्रेरियन अनरेस्ट एण्ड सोसियो-इकोनोमिक चेंज इन बिहार 1917-78. दिल्ली, 1981

7. कु. रेणु, स्वामी सहजानंद और बिहार का किसान आंदोलन'', 1927-47. पटना, 1992

8. सिन्हा रामनरायण, ''बिहार टेनेटरी'', ;1783-1833द्ध दिल्ली- 1968.

9. दत्ता के.के., महात्मा गाँधी इन बिहार'' स्पीचेज एण्ड राइटिंगस, पटना -19

10. चतुर्वेदी ए.के., ''इतिहास'' उपकार प्रकाशन, आगरा, 2000. पृष्ठ सं0-108